

Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constituent unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar))

NAAC Accredited 'B+'

Topic : श्रम की माँग व पूर्ति का विश्लेषण (ANALYSIS OF DEMAND AND SUPPLY OF LABOUR)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

श्रम की माँग व पूर्ति का विश्लेषण (ANALYSIS OF DEMAND AND SUPPLY OF LABOUR)

श्रम बाजार में हमने यह अध्ययन किया कि श्रम बाजार में उद्योगपति श्रम का क्रेता होता है और श्रमिक श्रम का विक्रेता होता है। इस प्रकार श्रम बाजार के निम्नलिखित दो महत्वपूर्ण अंग होते हैं-

(I) श्रम की माँग (Demand for Labour),

(II) श्रम की पूर्ति (Supply of Labour)।

इस अध्याय में हम श्रम बाजार के इन दो महत्वपूर्ण अंगों की विस्तृत विवेचना करेंगे।

श्रम की माँग (DEMAND FOR LABOUR)

आर्थिक विश्लेषण में मजदूरी श्रम की कीमत है। इसलिए किसी दूसरी वस्तु की कीमत की तरह इसका निर्धारण भी माँग तथा पूर्ति की शक्तियों के द्वारा होता है। मजदूरी श्रम की कीमत है और इस पर कोई नियन्त्रण न होने पर दूसरी कीमतों की तरह इसका निर्धारण पूर्ति एवं माँग के द्वारा होता है।

श्रम की माँग धारणाएँ (Concept of Demand) श्रमिकों की माँग के सम्बन्ध में दो विशिष्ट धारणाएँ हैं- (1) हर औद्योगिक बाजार में काम पर लगे श्रमिकों की संख्या के रूप में माँग की धारणा, और (2) आर्थिक सिद्धान्तों से निकली हुई वह धारणा जो वस्तुओं के लिए 'कीमत मात्रा फलन' (Price Quantity Function) की भाँति एक कीमत रोजगार फलन (Price Employment Function) को बताती है।

प्रथम धारणा के अनुसार श्रम की माँग से तात्पर्य श्रम की उस मात्रा से है जो कि उद्योगपति किसी दर पर खरीदने के लिए तत्पर रहता है।

द्वितीय धारणा के अनुसार यह मान लिया जाता है कि श्रमिक की कीमत के साथ श्रमिक की माँग बदलती है जिससे रोजगार और श्रमिकों की सम्भावित माँग के बीच अन्तर हो सकता है। इस आधार पर बनाया गया माँग वक्र मजदूरी की कीमत और मजदूरी की मात्रा के बीच सम्बन्ध दर्शाती है। यद्यपि मजदूरी के फलन के रूप में श्रमिकों की माँग के दृष्टिकोण का सैद्धान्तिक कीमत विश्लेषण में काफी महत्व है, परन्तु श्रम अर्थशास्त्र में यह विश्लेषण उपयोगी नहीं है।

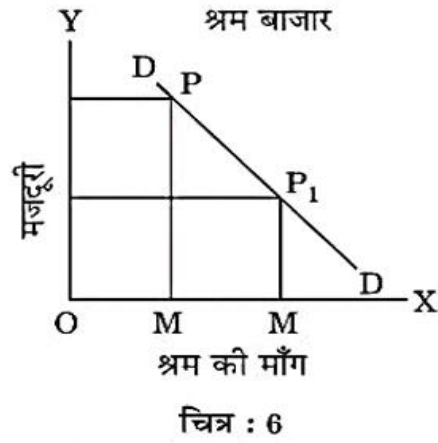
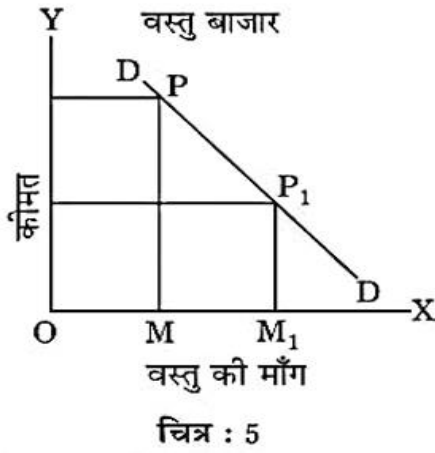
श्रम की माँग का अध्ययन हम निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे-

- (1) एक उद्योगपति द्वारा श्रम की माँग,
- (2) समाज में मजदूरी एवं श्रम की माँग में सम्बन्ध,
- (3) श्रम की माँग का प्रभावित करने वाले घटक।

एक उद्योगपति द्वारा श्रम की माँग (Demand for Labour from a Industrialist)

एक उद्योगपति श्रम की माँग लाभ अर्जित करने के लिए करता है। अतः यदि अन्य बातें सामान्य रहें, तो जितनी मजदूरी की दर बढ़ेगी उद्योगपति का लाभ भी घटेगा। फलतः उद्योगपति कम मजदूरी की दर पर अधिक श्रमिक और अधिक मजदूरी की दर पर कम श्रमिकों को खरीदेगा। इसका अर्थ यह है कि माँग का नियम एक उद्योगपति के साथ श्रम की माँग के सम्बन्ध में भी लागू होता है, जैसा कि चित्रों 5 एवं 6 से स्पष्ट होता है। दोनों ही

चित्रों में DD माँग वक्र है जो ऊपर से नीचे गिरती हुई है। जो इस बात को स्पष्ट करती है कि वस्तु बाजार और श्रम बाजार दोनों में ही कीमत गिरने से वस्तु की माँग एवं श्रम की माँग बढ़ती है।



श्रम की पूर्ति (SUPPLY OF LABOUR)

श्रम की पूर्ति श्रमिकों द्वारा की जाती है अर्थात् श्रमिक श्रम विक्रेता है। श्रम की पूर्ति से आशय है- (i) एक विशेष प्रकार के श्रमिकों की संख्या जो मजदूरी की भिन्न-भिन्न दरों पर काम करने के लिए तैयार है और (ii) कार्य करने के घण्टे जो कि प्रत्येक श्रमिक मजदूरी की विभिन्न दरों पर देने को तत्पर है। अतः श्रम की पूर्ति से आशय एक विशेष प्रकार के श्रम के उन घण्टों एवं दिनों से है जिन्हें विभिन्न मजदूरी दरों पर नियोजनार्थ प्रस्तुत किया जाता है।

श्रम की पूर्ति के संघटक (Components of Supply of Labour)

श्रम की पूर्ति का निर्माण निम्नलिखित तत्वों से होता है-

(1) **श्रमिकों की संख्या (Number of Workers)** - श्रम शक्ति श्रमिकों की संख्या पर आधारित होती है। श्रमिकों की संख्या स्वयं देश की जनसंख्या पर निर्भर करती है। जनसंख्या का कौन-सा भाग श्रमिकों में सम्मिलित किया जाता है। इसके सम्बन्ध में प्रो. रेनाल्ड्स लिखते हैं, "किसी व्यक्ति को श्रम शक्ति में उसी समय सम्मिलित करना चाहिए, जबकि वह कार्य करने में समर्थ हो और या तो उसके पास कार्य हो अथवा वह कार्य की सक्रिय तलाश में हो।" परन्तु इस आधार पर श्रमिकों का अनुमान लगाना कठिन होता है, क्योंकि हो सकता है कोई श्रमिक अपने को कार्य के योग्य समझता हो परन्तु उद्योगपति उसे अयोग्य समझते हों। कार्य की सक्रिय तलाश पर भी मतभेद हो सकता है। जनसंख्या का वह प्रतिशत जो श्रम शक्ति में सम्मिलित होता है उसे श्रम शक्ति सहभागिता दर (Labour Force Participation Rate) कहते हैं। श्रम शक्ति सहभागिता दर निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात की जाती है-

$$\text{श्रम शक्ति सहभागिता दर} = \text{श्रम शक्ति कुल जनसंख्या} \times 100$$

श्रम शक्ति सहभागिता दर श्रम शक्ति की आयु, लिंग, शैक्षणिक स्तर, कार्य करने की इच्छा आदि तत्वों पर निर्भर करती हैं। सामान्यतया श्रम शक्ति सहभागिता दर जितनी अधिक होगी उत्पादन एवं आर्थिक विकास उतना ही अधिक होगा।

श्रम शक्ति सहभागिता दर सरलता से नहीं बदलती। प्रो. रेनाल्ड्स के शब्दों में, " 'श्रम शक्ति' सहभागिता दर सामान्यतया अल्पकाल एवं दीर्घकाल दोनों में ही लगभग स्थिर रहती हैं।" ऐसा ही मत सी. डी. लौंग भी व्यक्त करते हैं।

उनके शब्दों में कार्य करने वाली उम्र के मजदूरों का वह प्रतिशत जो श्रम शक्ति का निर्माण करता है मजदूरों की आय में परिवर्तन होने पर भी पूर्णतया अपरिवर्तित रहता है।"

(2) कार्य के घण्टे (Hours of Work) - श्रम की पूर्ति का निर्धारण करने वाला दूसरा महत्वपूर्ण घटक कार्य के घण्टे या समय है। बिना इस बात को मालूम किये कि श्रमिकों द्वारा कुल कितने घण्टे कार्य किया जाता है, इस बात का अनुमान लगाना कठिन है कि श्रम की वास्तविक पूर्ति क्या होगी। उदाहरण के लिए, श्रम संगठनों के आन्दोलन के साथ श्रमिकों के कार्य करने के घण्टों में कमी आयी है। फलतः श्रम की पूर्ति भी कम हुई है। सामान्यतया श्रम के कार्य के घण्टों के घटने से श्रम की पूर्ति घटती है और कार्य के घण्टों की संख्या बढ़ने से श्रम की पूर्ति भी बढ़ती है।

(3) कार्य की गति (Speed of Work) - श्रमिकों द्वारा कार्य किस गति से किया जाता है यह भी श्रम की पूर्ति की मात्रा को प्रभावित करती है। एक श्रमिक जो दोगुनी गति से कार्य करता है वस्तुतः दो श्रमिकों की पूर्ति कर रहा है। श्रमिकों की कार्य की गति अनेक बातों पर निर्भर करती है; जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, जलवायु इत्यादि। जानबूझकर भी श्रम की गति में परिवर्तन किया जा सकता है।

(4) श्रम की कार्यकुशलता (Efficiency of Labour) - श्रम की कार्यकुशलता का अर्थ यहाँ पर गुणात्मक है जिसके अन्तर्गत हम यह देखते हैं कि श्रमिक के कार्य की किस्म क्या है व कितना अपव्यय करता है, दुर्घटनाएँ कितनी हैं, आदि। श्रम की कार्यकुशलता बढ़ाकर भी श्रम की पूर्ति बढ़ायी जा सकती है।

रेनाल्ड्स ने कहा है, "श्रम शक्ति में कितने श्रमिक हैं- इतना जानने मात्र से काम नहीं चलेगा। श्रमिक की शारीरिक क्षमता, उनके द्वारा वर्ष में किये जाने वाले कार्य के घण्टों की संख्या, कार्य की तीव्रता, उनके कार्य की योग्यता एवं अनुभव सबका प्रभाव राष्ट्रीय उत्पादन पर पड़ेगा।"

प्रो. विल्बट मूल ने इन चारों घटकों को एक समीकरण में बाँधा है।"

$$P=N \times S \times T \times R$$

जहाँ

P = उत्पादकता

N = श्रमिकों की संख्या

S = श्रमिकों की कार्यकुशलता

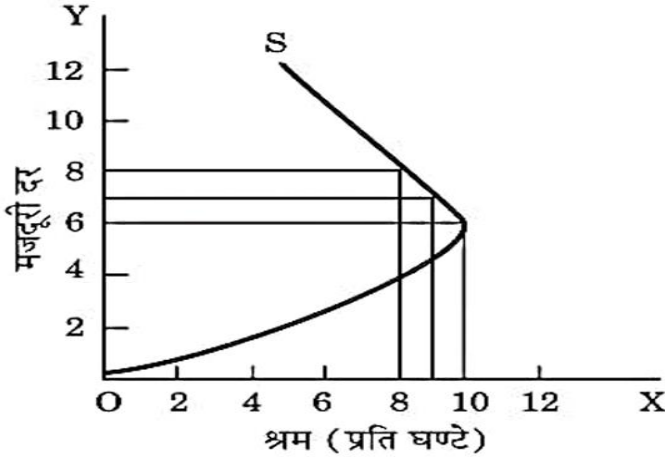
T = कार्य के घण्टे

R = कार्य की गति

उपर्युक्त में से किसी भी घटक के अधिकतम होने पर श्रम की उत्पादकता अर्थात् श्रम की पूर्ति बढ़ती है। आधुनिक युग में उपर्युक्त में से कुछ घटकों में वृद्धि हुई है। जैसे- श्रमिकों की संख्या में वृद्धि कार्य की गति और श्रमिकों की कार्यक्षमता में वृद्धि वस्तुतः श्रमिकों के कार्य के घण्टों में कमी हुई है।

श्रम में पूर्ति का नियम (LAW OF SUPPLY OF LABOUR)

पूर्ति का सामान्य नियम यह बताता है कि अन्य बातें समान रहने पर जैसे-जैसे कीमत में वृद्धि होती जाती है वैसे-वैसे पूर्ति की मात्रा बढ़ती जाती है और जैसे-जैसे वस्तु की कीमत में कमी होती जाती है वस्तु की पूर्ति भी कम हो जाती है। जैसा कि चित्र 10 से स्पष्ट है। परन्तु श्रम के साथ पूर्ति का यह नियम लागू नहीं होता है।



चित्र : 10

मजदूरी की दर पर पूर्ति का क्या प्रभाव पड़ता है, इस सम्बन्ध में विदेशों में जो अध्ययन व सर्वेक्षण किये गये हैं उनके आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है-मजदूरी की दर बढ़ने से श्रम की पूर्ति घटती है और मजदूरी घटने से श्रम की पूर्ति बढ़ती है अर्थात् अर्थव्यवस्था का श्रम का पूर्ति वक्र ऋणात्मक होता है जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

चित्र 10 को देखने से पता चलता है कि जैसे-जैसे मजदूरी शून्य से बढ़ती जाती है, काम करने के घण्टे भी बढ़ते जाते हैं। 6 रुपये मजदूरी पर वह प्रतिदिन 10 घण्टे काम करता है जो अधिकतम सीमा होती है। उसके पश्चात् यदि मजदूरी की दर में वृद्धि होती है तो काम के घण्टों की संख्या कम होने लगती है; जैसे- जब मजदूरी 8 रुपये होती जाती है तो वह केवल 8 घण्टे ही काम करता है। इस प्रकार मजदूरी की दर बढ़ जाने पर मजदूर अधिक घण्टे काम करने के लिए तैयार नहीं है, वरन् वह अपनी इस बढ़ी हुई आय से अधिक आराम खरीदना चाहता है। दिए चित्र में OS श्रमिकों की पूर्ति वक्र है जो यह प्रदर्शित करता है कि अधिक मजदूरी बढ़ने से किस प्रकार काम करने के घण्टों पर इसका प्रभाव पड़ता है।

पोल लगलस ने अपने एक अध्ययन में यह पाया कि अल्पकाल में यदि अमेरिका में प्रति घण्टा 1 प्रतिशत मजदूरी की दर में वृद्धि की जाती है तो श्रम की पूर्ति में 0.24 से 0.33 प्रतिशत तक कमी हो जाती है। यद्यपि भारत में इस प्रकार के अध्ययन का अभाव है, परन्तु मानव प्रकृति की उस विशेषता में यहाँ भी कोई विशेष अन्तर नहीं होगा।

श्रम के पूर्ति वक्र के ऋणात्मक होने के कारण (CAUSES FOR NEGATIVE SUPPLY CURVE OF LABOUR)

पूरे समाज में श्रम की पूर्ति वक्र के ऋणात्मक होने का प्रमुख कारण श्रम के साथ श्रमिक का जुड़ा होना है। श्रम करने का मुख्य उद्देश्य अपना और अपने परिवार का अच्छी तरह से पालन-पोषण करना होता है। मजदूरी तो इस उद्देश्य की पूर्ति का साधन मात्र है। यदि मजदूरी कम हो जाती है तो समाज के सदस्यों को जीवन-निर्वाह के लिए श्रम की पूर्ति करना आवश्यक हो जाता है। फलतः श्रम की पूर्ति के प्रमुख चार संगठन अर्थात् श्रम की संख्या, कार्य के घण्टे, कार्य की गति और श्रम की कुशलता में वृद्धि करने की कोशिश भी की जाती है। अतः यदि मजदूरी की दर में परिवर्तन होता है तो श्रम की पूर्ति के प्रमुख संगठनों में भी परिवर्तन होता है, अर्थात् श्रम की पूर्ति में वृद्धि व कमी होती है जैसा कि निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होता है-

(1) श्रम की संख्या (Number of Labour) - यदि मजदूरी की दर घट जाती है तो परिवार के अधिक सदस्यों को कार्य करना पड़ता है। निर्धन परिवारों में तो बच्चों, स्त्रियों और वृद्धों को भी कार्य करने के लिए विवश हो जाना पड़ता है। इस प्रकार मजदूरी की दर घटने पर श्रम की पूर्ति बढ़ जाती है। इसके विपरीत, मजदूरी की दर बढ़ने पर श्रमिक कम घण्टे ही कार्य करना चाहते हैं। इसके कारण श्रम की पूर्ति घट जाती है। स्पष्टतः मजदूरी की संख्या या पूर्ति मजदूरी की दर के विपरीत दिशा में चलती है। (2) कार्य के घण्टे (Hours of Work) - यदि मजदूरी की दर कम हो जाती है तो समाज के सदस्यों को अधिक समय कार्य करना पड़ेगा, अर्थात् कार्य के घण्टे बढ़ जायेंगे। जिन उद्योगों में कार्य के अनुसार मजदूरी दी जाती है उनमें तो यह प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि मजदूरी की दर घटने से श्रम के कार्य के घण्टों में अर्थात् श्रम की पूर्ति में वृद्धि होती है और मजदूरी की दर बढ़ने से कार्य के घण्टों में कमी अर्थात् मजदूरी की पूर्ति में कमी होती है।

(3) कार्य की गति (Speed of Work) - श्रम की पूर्ति का तीसरा घटक कार्य की गति है। मजदूरी की दर घटने से कार्य की गति बढ़ानी पड़ती है। जहाँ कार्य के अनुसार मजदूरी दी जाती है वहाँ कार्य की गति को बढ़ाना अत्यन्त आवश्यक होता है। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि सामान्यतया जब मजदूरी की दर घटती है तो श्रमिक अपनी कार्य करने की गति को बढ़ाने का प्रयास करते हैं जिससे श्रम की पूर्ति में वृद्धि होती है। इसके विपरीत, मजदूरी की दर बढ़ने पर विपरीत स्थिति उत्पन्न होती है।

मॉरिस डॉब का भी ऐसा ही कथन है। वे लिखते हैं, "मजदूरी कम होने से श्रम की पूर्तितीन प्रकार से बढ़ सकती है। पहली बात तो यह है कि निर्धनता के कारण अधिक संख्या में युवा पुरुषों और स्त्रियों को काम करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। दूसरी बात यह है कि काम करने वाले मजदूरों को कार्य का समय बढ़ाना पड़ता है और तीसरी बात यह है कि उन्हें अधिक तीव्रता से काम करना पड़ता है।"

(4) श्रमिक की कार्यकुशलता (Efficiency of Labour) - मजदूरी की दर का प्रभाव श्रम की कार्यकुशलता पर भी पड़ता है, क्योंकि कम मजदूरी के कारण जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ पूरी न होने के कारण श्रमिकों की कार्यकुशलता घटती है, फलतः श्रम की पूर्ति कम हो जाती है। मजदूरी की दर बढ़ने से श्रमिक की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है, क्योंकि वह जीवन की अनिवार्यताओं को पूरा करने के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि पर करने लगता है जिससे उसकी कार्यकुशलता में वृद्धि होती है और श्रमिकों की पूर्ति में वृद्धि हो जाती है।

रिचार्ड लीस्टर ने श्रम की पूर्ति के विषय में लिखा है, "अल्पकालीन श्रम की पूर्ति का वक्र इस कारण ऋणात्मक होता है कि जैसे-जैसे परिवार की वास्तविक आय बढ़ती जाती है मजदूर सप्ताह में काम करने की माँग करते हैं, अधिक आराम चाहते हैं। महिलाएँ पैसे के लिए अधिक मजदूरी करने के लिए उत्सुक नहीं होतीं और औसत कर्मचारी का कार्यकाल दोनों छोरों पर घट जाता है, क्योंकि वह शिक्षा पर अधिक समय लगाता है और जल्दी अवकाश प्राप्त कर लेता है।"

(5) श्रम की गतिशीलता (Mobility of Labour) - श्रम की पूर्ति वक्र के ऋणात्मक होने का एक कारण श्रम की गतिशीलता का कम होना भी है। कारण यह है कि श्रम की गतिशीलता मजदूरी की दर के अतिरिक्त अन्य घटकों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। किसी स्थान में मात्र मजदूरी की दर बढ़ने से ही श्रम की पूर्ति नहीं बढ़ेगी, क्योंकि बाहर से मजदूर आने में बहुत सी बातों का होना आवश्यक है; जैसे-जलवायु का अनुकूल होना, यातायात व संचार व्यवस्था की सुविधाएँ आदि। लीस्टर ने उपयुक्त ही लिखा है, "यदि श्रम की गतिशीलता शून्य हो जाये तो प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक उद्योगपति की श्रम की पूर्ति का वक्र ऋणात्मक हो जायेगा क्योंकि मजदूरी घटने से श्रमिकों को अधिक कार्य करना पड़ेगा और परिवार के अधिक व्यक्ति काम करने के लिए बाध्य हो जायेंगे।"

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्रम की पूर्ति के ऋणात्मक वक्र की एक सीमा होती है। अत्यन्त अल्पकाल में वक्र ऋणात्मक नहीं होता अथवा नाममात्र का होता है, क्योंकि मजदूरी दर का प्रभाव श्रम की पूर्ति पर कुछ समय लगता है।

इसके साथ ही यदि मजदूरी की दर में निरन्तर कमी आती जाती है तो श्रम की पूर्ति लगातार नहीं बढ़ेगी, क्योंकि कम मजदूरी के कारण श्रमिकों का स्वास्थ्य खराब होगा, जीवन-स्तर नीचा होगा जिसके कारण अधिक काम करना सम्भव नहीं होगा, अर्थात् श्रम की पूर्ति कम होने लगेगी।